मूर्ख बत्तख



जैक केंट



मूर्ख बत्तख

जैक केंट



एक दिन बत्तख जंगल में टहलने गई.



लोमड़ी भी वहां पर दौड़ लगा रही थी.

"गुड मॉर्निंग." बत्तख ने ख़ुशी-ख़ुशी कहा.

"मूर्ख बत्तख!" लोमड़ी ने कहा. "यह सुबह नहीं, बल्कि दोपहर का समय है!"



"वो सही है," बत्तख ने सूरज की ओर देखते हुए कहा.

जब वे एक साथ दौड़ रहे थे, तब लोमड़ी लगातार बुदबुदा रही थी, "कुछ लोग इतने बेवकूफ होते हैं कि उन्हें अपनी मूर्खता का पता तक नहीं होता है!"



थोड़ी देर बाद बत्तख ने कहा.
"देखो! वो देवदार का पेड़ गिर रहा है!"
फिर बत्तख उस रास्ते से तुरंत हट गई.



लेकिन लोमड़ी उसी रास्ते पर ही चलती रही.

"मूर्ख बत्तख!" लोमड़ी ने खुद के ऊपर पेड़ के गिरने के बाद कहा, "वो देवदार नहीं एक (बाँझ) ओक का पेड़ है!"



"वो तो ठीक है." बत्तख ने
बाँझ के कोन्स को देखते हुए कहा.



बत्तख इतनी ताकतवर नहीं थी कि
वो लोमड़ी के ऊपर से पेड़ को उठा सके.



फिर बत्तख ने सोचा और सोचा.



फिर उसने लोमड़ी के नीचे से कुछ जमीन खोदी ताकि लोमड़ी रेंगकर बाहर निकल सके.





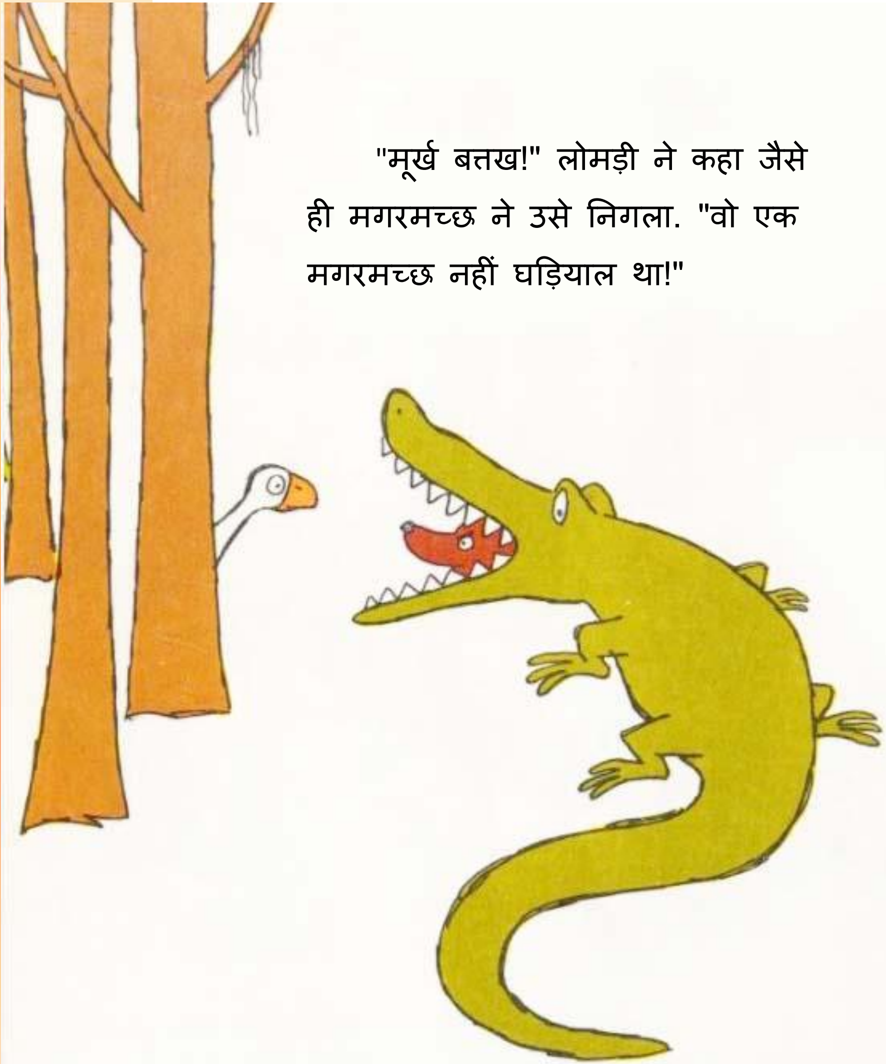
जब वे एक साथ दौड़ रहे थे, तब लोमड़ी लगातार बुदबुदा रही थी, "कुछ लोग इतने बेवकूफ होते हैं कि उन्हें देवदार और बाँझ के पेड़ के बीच का अंतर तक पता नहीं होता है!"



दलदल के किनारे पर, बत्तख रुक गई. "ज़रा ध्यान से देखो!" उसने कहा. "वहाँ पर एक मगरमच्छ है!"

पर लोमड़ी वैसे ही आगे बढ़ती रही.

"मूर्ख बत्तख!" लोमड़ी ने कहा जैसे ही मगरमच्छ ने उसे निगला. "वो एक मगरमच्छ नहीं घड़ियाल था!"





"मैं उसे मगरमच्छ के मुंह में से कैसे निकाल सकती हूँ?" बत्तख ने सोचा. "या फिर घड़ियाल के मुंह में से."

उसने सोचा और सोचा.





अंत में, बत्तख ने अपनी पूंछ से एक पंख बाहर निकाला और उसे एक लंबे डंडे के अंत में बांधा. फिर उसने पंख से मगरमच्छ की नाक में गुदगुदी की.

उससे मगरमच्छ को छींक आई और लोमड़ी बाहर निकल गई.



जब वे एक साथ दौड़ रहे थे, तब लोमड़ी लगातार बुदबुदा रही थी, "कुछ लोग इतने बेवकूफ होते हैं कि उन्हें मगरमच्छ और घड़ियाल के बीच का अंतर भी पता नहीं होता है!"

थोड़ी देर बाद बत्तख ने कहा. "ज़रा देखो! एक गिद्ध आ रहा है!" फिर बत्तख एक पेड़ के पीछे छिप गई.



लेकिन लोमड़ी यूँ ही चलती रही.



"बेवकूफ बत्तख," लोमड़ी ने कहा जब चिड़िया उसे अपने पंजो में पकड़कर उड़ाकर ले गई. "वो एक चील है!"



बत्तख के पास सोचने के लिए ज्यादा समय नहीं था. चील दूर जा रही थी. बत्तख चील के पीछे उड़ी. चील बहुत तेज नहीं उड़ पा रही थी क्योंकि लोमड़ी काफी भारी थी.

वे एक झील के ऊपर थे,
जब बत्तख, चील की पीठ पर उतरी.





उससे चील इतनी चौंकी कि उसके पंजों से लोमड़ी गिर पड़ी. लोमड़ी झील में गिरी और फिर किनारे पर तैरकर आ गई.



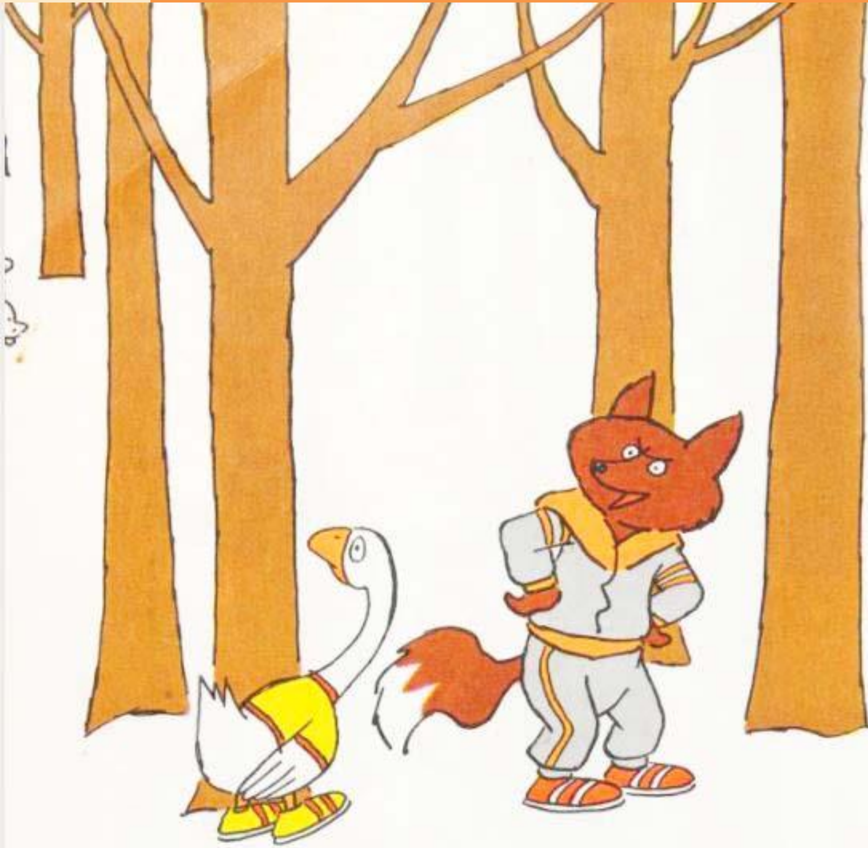


जब वे एक साथ दौड़ रहे थे, तब लोमड़ी लगातार बुदबुदा रही थी, "कुछ लोग इतने बेवकूफ होते हैं कि वे गिद्ध और चील के बीच का अंतर भी नहीं जानते हैं!"





थोड़ी देर बाद बत्तख ने कहा.
"ज़रा देखो! अब कौन आ रहा है...!"



"कौन आ रहा है?" लोमड़ी ने कहा.
"चलो इसे इस बार मैं ठीक से देखती हूँ!"

बत्तख ने लोमड़ी को
गड्ढे में धकेल दिया.....



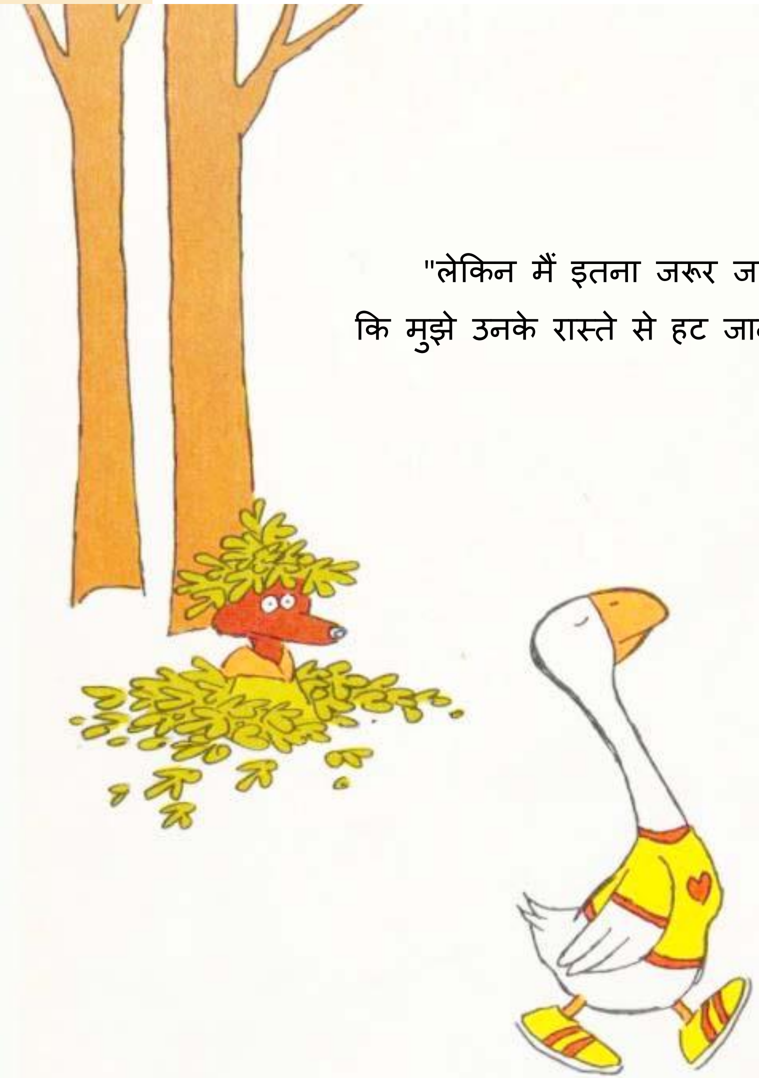
......और उसे पत्तों से ढक दिया.





"मुझे नहीं पता कि उसे क्या कहते हैं,"
बत्तख ने उस शिकारी दल को देखकर कहा.

"लेकिन मैं इतना जरूर जानती हूँ
कि मुझे उनके रास्ते से हट जाना चाहिए."



समाप्त